# *<u>घर घर पाठशाला,हर घर पाठशाला</u>*

Jinswara एवं Swaroop Sthirtha Foundation के द्वारा "DESIGN YOUR PATHSHALA", मैं "मंगलार्थी अभिषेक जैन" अपने essay को प्रश्न - उत्तर के रूप में यहां पर लिखने की कोशिश की हैं।

यहां पर मैंने अपने निबंध को दो भागों में बांटा हैं और दोनों ही भागों को प्रश्न उत्तर से अपने विषय को रखने की कोशिश की है -

**A. पाठशाला को पारंपरिक दृष्टिकोण (Traditional Point of View) से समझना**

**B. पाठशाला को आधुनिक दृष्टिकोण (Modern point of view) से देखना**

**C. सामान्य निष्कर्ष (Conclusion)**

## A. <u>पाठशाला को पारंपरिक दृष्टिकोण से समझना</u>

**प्रश्न 1: पाठशाला की शुरुआत कैसे करें और उसका दायरा कैसे फैलाये?**

उत्तर: हम इसको एक शहर के उदाहरण से समझ सकते हैं, जैसे कि जयपुर (*इसका चित्रण मैप में दिखान की कोशिश की गई हैं*) -

सबसे पहले तो पाठशाला का दायरा बढ़ाने के लिए हम अपने शहर का मैप ले और उसके अनुसार पूरे शहर को छोटे छोटे क्षेत्रों में बांट दे और फिर हर क्षेत्र के मंदिरों को चिन्हित करके,उन मंदिरों के अध्यक्ष या व्यवस्थापकों से मिल कर पाठशाला का ढांचा तैयार करे, इस तरीके से हमारी यह कोशिश रहे की हर ३-४ किलोमीटर के दायरे में एक ना एक पाठशाला खुल सके, जिससे बच्चो को दूर जाना ना पड़े और ज्यादा से ज्यादा बच्चे उसका लाभ ले सके।

| मुख्य क्षेत्र | मंदिरों के नाम |
|---|---|
| 1. सी - स्कीम | श्री दिगम्बर जैन सेठी चैत्याल्य |
| 2. घट gate | श्री दिगम्बर जैन मंदिर |
| 3. पिंक सिटी | श्री दिगम्बर अतिशय क्षेत्र मंदिर |
| 4. बाईस गोडाउन | श्री 1008 दिगम्बर जैन मंदिर |
| 5. रामबाग | श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर |
| 6. राजा पार्क | श्री दिगम्बर जैन मंदिर |
| 7. बापू नगर | श्री टोडरमल स्मारक जैन मंदिर |

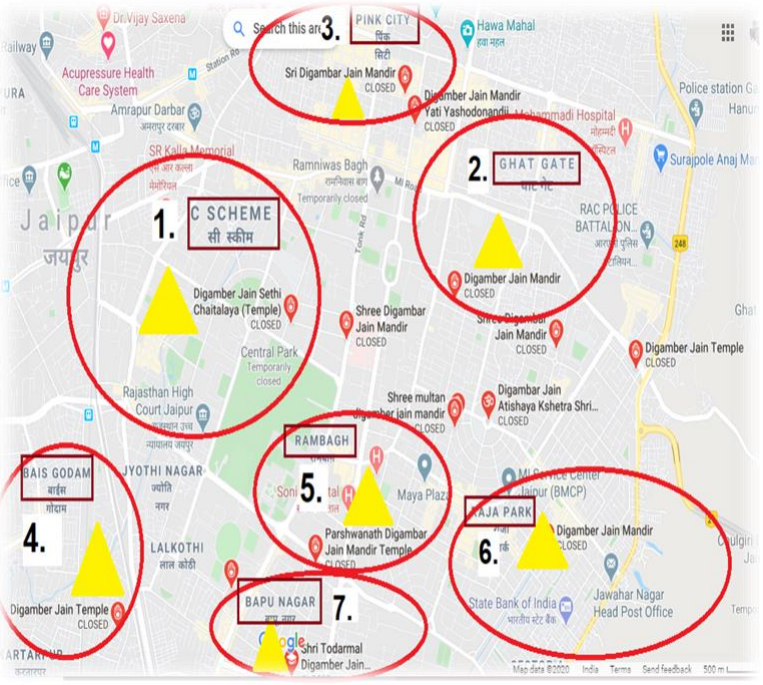

**प्रश्न 2: प्रत्येक मंदिर में पाठशाला संचालन के लिए क्या मूलभूत सुविधाएं रहेनी चाहिए ?**

उत्तर :

१.इसमें एक साफ सुथरा कमरा, जिसमें बच्चो से संबंधित जिनवाणी, धार्मिक एवं ज्ञानवर्धक खेलो से संबंधित सामग्री, फर्स पर दरी या चटाई, लिखने के लिए टेबल और सभी बच्चो को एक - एक कॉपी पेन उपलब्ध कराना चाहिए।

२.शिक्षा एक त्रिकोणी प्रकिया है - जिसमे शिक्षक,छात्र और पाठ्यक्रम में एक में भी गड़बड़ हो तो शिक्षा सही नही हो सकती।पाठशाला में भी सही ज्ञान देने के लिए सही अध्यापक होना बहुत महत्वपूर्ण है।

३. बच्चो के घर से पाठशाला एवं पाठशाला से घर तक आने-जाने की व्यवस्था, इसके लिए एक जिम्मेदार व्यक्ति (वो चाहे तो पाठशाला के अध्यापक भी हो सकते हैं या कोई और) और उपयुक्त ट्रांसपोर्ट का प्रबंधन।

**प्रश्न3.पाठशालाओं की आवृत्ति/नियमितता क्या होनी चाहिए :प्रतिदिन; साप्ताहिक या ग्रीष्मकालीन/शीतकालीन ?**

उत्तर :

१.**प्रतिदिन पाठशालाएं** : अगर बच्चो का उत्साह और सारी व्यवस्थाएं अनुरूप चल रही हैं तो फिर पाठशाला को प्रतिदिन के लिए भी बढ़ाया जा सकता है।

२.**साप्ताहिक पाठशालाएं** : लेकिन ऐसा देखने में आता है कि प्रतिदिन पाठशालाएं चलने में बच्चो का इतना उत्साह बना नहीं रहता और व्यवस्थाएं भी बिगड़ने लगती हैं, तो इन स्थितियों में पाठशालाओं को अगर हफ्ते में किन्हीं २-३ विशिष्ट दिन (सप्ताहांत) चलाया जाए,तो, उसमे भी कोई दोष नहीं हैं और विशिष्ट दिनों में यह फायदा हैं की वाहा पर बच्चे भी अत्यधिक जुड़े रहेंगे और व्यस्वाथाएं करने भी ज्यादा समस्याएं नहीं आएंगी।

३.**ग्रीष्मकालीन/शीतकालीन पाठशालाएं:** क्या मंदिरों के व्यस्वाथपको या अध्यक्षों की यह सोच कि पाठशालाएं केवल गर्मी या सर्दी की छुट्टियां में चलाए जाई, जहां पर वो पाठशालाओं को प्रतिदिन एवं विशिष्ट दिन (सप्ताहांत) चलाने में भी सक्षम हैं ?

उत्तर : यह सोच पूरी तरीके से उचित नहीं है, अगर पाठशालाएं केवल गर्मी या सर्दी की छुट्टियां में चलाए जाई, तो उस स्थिति में बच्चे तो आएंगे, लेकिन उनका बीच में पूरी साल तक, कुछ धार्मिक पठन पाठन ना से होने के कारण उनका धर्म से जुड़ाव उन छुट्टियों तक ही सीमित हो जाता हैं, इसीलिए केवल गर्मी या सर्दियों मै पाठशाला चलाना अधिक कार्यकारी नहीं कहा जा सकता है, अगर नियमित रूप से पाठशालाएं चली जा सकती हैं।

**प्रश्न 4. क्यों आज के समय में पाठशाला को केवल ऑनलाइन चलाना, जहां पर मंदिर के व्यवस्थापक और अध्यक्ष पाठशालाओं को ऑफलाइन मोड (मंदिरों में पाठशाला) में चलने में भी समर्थ हैं ?**

उत्तर : यह वास्तव में एक वाद विवाद का विषय है, दोनों ही मॉडलों में कुछ फायदे हैं और कुछ नुकसान -

१. **ऑनलाइन मोड** : पाठशालाओं को ऑनलाइन मोड में चलाने से जहां बच्चो को घर बैठे बैठे ही सब कुछ मिल जाता है, आने जाने की परेशानी से भी मुक्त हो जाते हैं, और ज्यादा से ज्यादा बच्चे भी जोड़े जा सकते हैं, और मंदिरों की व्यवस्थाएं संबंधित परेशानी भी नहीं रहती

२.**ऑफलाइन मोड (मंदिरों में पाठशाला)** : जहां ऑनलाइन मोड के फायदे हैं, वहां पर इसके नुकसान भी कम नहीं हैं, अगर बच्चे मंदिरों मैं आकर पाठशालाएं ले तो उस स्थति में वाहा पर और बच्चों से मिलते हैं जिनसे सत्संगति मिलती हैं; मंदिर दर्शन का लाभ मिलता है।

**सामान्य निष्कर्ष:** सामान्य रूप से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अगर मंदिरों में नियमित रूप से पाठशालाओं की व्यवस्थाएं हो सकती है तो मंदिरों मैं आकर पाठशाला लेना ज्यादा कार्यकारी हैं , लेकिन जहां पर ऐसी सुव्यवस्थाएं बनाना मुश्किल है तो वहा पर ऑनलाइन मोड का सहारा लिया जा सकता है क्योंकि "SOMETHING IS BETTER THAN NOTHING".

## B. पाठशाला को आधुनिक दृष्टिकोण (Modern point of view) से देखना

प्रश्न 1 : क्या पाठशालाएं केवल बच्चो को एक जगह बैठा कर, अध्यापक द्वारा उनको पढ़ाने तक ही सीमित है, क्या पाठशाला के और दूसरे भी प्रकार (forms) कहे का सकते हैं ???

उत्तर : इस प्रश्न को समझने से पहले हमे यह समझना पड़ेगा कि पाठशालाएं चलाने का उद्देश्य (objective) क्या हैं ?? उसका उत्तर यही आएगा कि बच्चो को या बच्चो तक जैन धर्म के संस्कार और जैन धर्म के मूलभूत सिद्धांत बच्चो तक पहुंचा सके, तो क्या वह जैन धर्म के सिद्धांत या संस्कार, केवल बच्चे मंदिर में ही जाकर ग्रहण कर सकते; तो उसका उत्तर है नहीं, और यहां पर फिर हमारा मुख्य प्रश्न उठता हैं कि पाठशालाओं के और क्या क्या प्रकार कहे जा सकते हैं ?

आज के समय में जहां पर बच्चा ७-८ घंटे स्कूल, और फिर tuitions भी जाते है, और भी पूरे दिन में नाना नाना प्रकार की गतिवधियों में रहते है जैसे खेल कूद, टीवी अथवा मोबाइल को देखना, तो वहां पर हम बच्चो से यह अपेक्षा करे की वो मंदिर में आकर में भी अपना समय जैन धर्म के सिद्धांतो को पढ़ने में दे सके, वो कितना उचित या प्रैक्टिकल हैं। और अगर आप कहे की बच्चा मंदिर जाके पाठशाला का समय नहीं निकाल पा रहा तो वो ऑनलाइन तो पाठशाला ग्रहण कर ही सकता है, तो क्या एक बच्चे से जिसने कभी भी जैन धर्म नहीं पढ़ा हो और जो जैन कुल में जन्मा हो या जो मंदिर तो जाता हैं अपने माता पिता के साथ लेकिन उसको कभी भी कोई उत्सुकता या सोच या कोई ऐसे प्रश्न पैदा नहीं हुए कि वो , उससे यह उम्मीदें लगाई जा सकती है कि वो अपनी मर्जी से ऑनलाइन पाठशालाएं ज्वाइन कर सकता हैं, तो इन सबके उत्तरो के लिए में जो पाठशालाओं के लक्षित लोग हैं, ऐसे हैं ४-१५ साल तक के बच्चे, को दो category में बांटूंगा

| प्रश्न | **पहले वो तरीके के बच्चे जिनको जैन धर्म में रुचि पैदा हो गई हैं 👦🎓 (यहां पर इन बच्चो को हम समझने के हिसाब type-1 बच्चे के देंगे** | **दूसरे वो बच्चे जिनको अभी रुचि पैदा नहीं हुई है 👦 (लेकिन अगर हम सही प्रयासों या सही तरीके से अपनी बात को रखे तो इन बच्चो में रुचि पैदा की जा सकती हैं )** |
|---|---|---|
| क्या यह बच्चे पाठशाला या ऑनलाइन क्लासेस अटेंड करते हैं ? | यह बच्चे वो बच्चे हैं जो मंदिरों में आकर पाठशालाएं लेने के लिए तत्पर हैं और जहां पर इन को ऐसी कोई सुविधा नहीं मिल रही या अपना समय इतना नहीं निकाल पा रहे तो कम से कम यह ऑनलाइन वाली पाठशालाएं लेते हैं | यह बच्चे वो बच्चे हैं जो मंदिरों में पाठशालाएं में नहीं आते हैं, सुविधा मिलने के बावजूद और क्योंकि, इनमें अभी रुचि या कोई प्रश्न विकसित नहीं हुए तो यह बच्चे ऑनलाइन पाठशालाएं में भी कोई रुचि नहीं रखते। |
| क्या इन बच्चो में रुचि है ? | हा, इन बच्चो में रुचि है | नहीं, अभी रुचि तो नहीं है, लेकिन अगर हम सही प्रयासों या सही तरीके से अपनी बात को रखे तो इन बच्चो में रुचि पैदा की जा सकती है |
| बच्चो कि रुचि कैसे बढ़ाई जा विकसित की जा सक्ती है ? | इस प्रश्न का उत्तर हम अपने पहले भाग में दें चुके हैं - **पाठशाला को पारंपरिक दृष्टिकोण (Traditional Point of View** | इन बच्चो (टाइप २) की रूचि कैसे विकसित की जा सकती हैं, इस प्रश्न का उत्तर हम नीचे प्रश्न क्रमांक-3 इसमें अलग से समझेंगे। |

**प्रश्न 3: कैसे टाइप २ 👦 बच्चो (जिन बच्चो में अभी रुचि विकसित नहीं हुई है लेकिन की जा सकती हैं) में रुचि विकसित की जा सकती हैं ?**

उत्तर : टाइप १ के बच्चे वो थे जो मंदिर में आकर पाठशालाएं लेते हैं, क्योंकि ऐसे बच्चो में जैन धर्म के प्रति रुचि और जिज्ञासा विकसित हो चुकी हैं, तो वो स्कूल और टयूशन से पाठशाला के लिए समय निकाल लेते हैं लेकिन टाइप २ के बच्चो में रुचि विकसित करनी हैं तो ऐसे बच्चे मंदिर नहीं आएंगे क्योंकि उनके अभी रुचि या उस प्रकार की सोच विकसित नहीं हुई हैं, तो अगर वो मंदिर नहीं आ रहे तो हम उनके घर पहुंचने का प्रयास कर सकते हैं। इसके लिए हम यह देखना पड़ेगा कि समान्य रूप से एक बच्चे का क्या schedule होता है और वो अपनी जीवन शैली (लाइफ स्टाइल) में किन किन चीजों से जुड़ता है या मिलता हैं, तो मुख्य रूप से एक बच्चा -

1. अपने परिवार (माता पिता, दादा दादी) ; 👨‍👩‍👧‍👦
2. अपने स्कूल/ट्यूशन ; 🏫
3. मनोरंजन के साधन - टेलीविजन, मोबाइल ; और 📱📺
4. अपने दोस्तों से जुड़ता हैं, 👫

तो हम इनको एक टेबल के माध्यम से समझेंगे की हर एक श्रेणी में क्या प्रॉब्लम्स है और हर श्रेणी में हम पाठशालाओं को जैसे जोड़ सकते हैं जिससे उस बच्चे में रुचि विकसित हो और जिन बच्चो में पहले से ही रुचि हैं उनकी रुचि बढ़ जाए -

| बच्चो से जुड़े हुए साधन | वर्तमान समय में हर साधन से जुड़ी हुई समस्याएं | इन समस्याओं के उपाय |
|---|---|---|
| १.अपने परिवार (माता पिता, दादा दादी) ; 👨‍👩‍👧‍👦 | मुख्यता यहां पर मैं तीन बिंदु रखना चाहता हूं<br>1.बच्चो को समय ना देना, इसका कारण की दोनों पति पत्नियों का नौकरी करना।<br>2. मां बाप का बच्चो के कैरियर पर ज्यादा फोकस देना बजाय उनके character या संस्कार पर<br>3.आज के समय में पति पत्नियों का अलग से एकल परिवार में रहना। | 1. महिलाएं आज नौकरी ना करे (अगर परिवार की परिस्थिति अनुकूल हैं), जिससे वो घर पर बच्चो को संस्कार दे सके और उनको जैन धर्म और उनके सिध्दांतो से परिचित करा सके।<br>2. माता-पिता को समझना चाहिए कि जितना भविष्य में बच्चे के लिए धन कमाना आवश्यक उससे कई गुना आवश्यक संस्कार रूपी धन है।यदि कमाया हुआ धन-मकान सही हाथों में जाए तो बच्चों के लौकिक पढ़ाई के साथ धार्मिक पढ़ाई पर ध्यान देना भी जरूरी है जिससे भविष्य में वो भैतिक चकाचौंध और गलत संगति में फसकर आपकी संपत्ति बर्बाद ना करे।<br>3.स्वतंत्रता के लिए आजकल हर कोई एकल परिवार में रहना पसंद करता है परंतु जो संस्कार बच्चों में दादा दादी, चाचा चाची के साथ स्वतः सहज ही आ सकते है वो एकल परिवार के बच्चों में आना मुश्किल है। दादा दादी बच्चों को कहानियां सुनाते है,अपने पुराने अनुभव साझा करते है, प्रेम देते है जिससे बच्चों के संस्कार की नीभ घर से ही तैयार हो जाती है |

| | | |
|---|---|---|
| २.अपने स्कूल/ट्यूशन ; | 1.स्कूलों में अच्छे अध्यापकों की कमी जो बच्चो को अच्छे संस्कार दे सके।<br>2. स्कूलों में छोटे बच्चो पर भी अधिक पढ़ाई, होमवर्क, प्रोजेक्ट वर्क और परीक्षाएं का बोझ देना, उस के कारण उनको पूरे दिन में कुछ समय ना मिल पाना।<br>3.स्कूलों में नैतिक विज्ञान ना पढ़ाना या पढ़ाना भी तो मात्र ऑपचारिकता में पढ़ाना | 1.जैसा कि हमारी सरकार एवम् हमारा संविधान भी अल्पसंख्यक शिक्षा संस्थाओं का बढ़ावा देती हैं, तो समाज और धार्मिक संस्थाएं अपने पैसों का सदुपयोग कर अधिक से अधिक अपने जैन विद्यायल खोलने में लगाए।<br>2.अपने धार्मिक विद्यायल में स्वयं का टाइम टेबल रह सकेगा तो बच्चे सुबह मंदिर में पूजन, प्रक्षाल कर सके,फिर स्कूल का बहाना नही बना सकते।<br>3.अपने विद्यालय में ऐसी नैतिक कक्षाएं लगाए जिसमे बच्चे अपने महापुरुष, सतियों की कहानियों के माध्यम से शिक्षा ले सके, और नैतिक विज्ञान मात्रा ऑपचरिकता ना बन कर रह जाए। |
| ३.मनोरंजन के साधन - टेलीविजन, मोबाइल्स ; | 1.परिवार वालों का कोई नियंत्रण नहीं रहना कि बच्चा मोबाइल पर क्या विषय वस्तु देख रहा है।<br>2.आज बच्चो का ख़ुद पर भी कोई नियंत्रण नहीं होना, और उसका कारण है कि टेलीविजन/मोबाइल पर इतने अच्छे से बच्चो को विषय वस्तु प्रस्तुत की जाना कि उनका आकर्षण उसकी ओर बढ़े रहना। | 1. परिवार वालो को एक निश्चित समय बांधना और बच्चो को ज्यादा से ज्यादा जैन धर्म की एनिमेटेड कहानियों की तरफ आकर्षित करना।<br>2. हम अच्छे से अच्छा, आसान एवम् आकर्षित कंटेंट को net/YouTube पर डाले, जिससे बच्चो का ख़ुद ही उसकी ओर आकर्षित बढ़े। |
| ४.अपने दोस्तों | 1. परिवार वालों का ध्यान नहीं देना कि उनका बच्चा कैसी संगति में है, और क्या वो दोस्त संस्कारित हैं कि नहीं ? | 1.दोस्तों की जीवन मे बहुत बड़ी भूमिका होती है, यदि बच्चे के दोस्त अच्छे होंगे तो पाठशाला जाने ,मंदिर जाने के लिए प्रेरित करेंगे और बुरी लत से दूर रखेंगे। इसलिए जरूरी है कि पालक ध्यान दे कि उनके बच्चों के कैसे दोस्त है। |

## C.सामान्य निष्कर्ष (Conclusion)

**प्रश्न 1 : क्या आज के समय में जहां बड़ी बड़ी संस्थाओं खुल गई जैसे मंगलायतान, टोडरमल स्मारक,, जहां पर बच्चे अध्ययन कर रहे हैं, तो वहा पर पाठशालाओं कि कितनी आवश्यकता है ?**

उत्तर : आज के समय में जो हो बड़ी संस्थाएं खुली हैं वहा पर ज्यादा बच्चो का प्रवेश ८ वीं या ९ वी से लिया जाता है, और वहीं पाठशालाओं में मुख्यतः ३-१५ साल (LKG to 8th Class) के बच्चे होते हैं। अगर एक बच्चा पाठशाला ही नहीं जा रहा तो उनसे यह उम्मीद लगाना की वो सीधे इन संस्थाओं में प्रवेश ले लेगा, वो कितना उचित है, यह पाठशालाएं एक ब्रिज का काम करती हैं उन बच्चो को इन संस्थाओं में प्रवेश करने में।

**प्रश्न 2: पाठशालाओं को संचालन करने में और उसको एक अच्छे स्तर पर ,कैसे पहुंचाया जा सकता है?**

उत्तर : पाठशालाओं को सुचारू रूप से संचालन करने में और बढ़ाने में, निम्नलिखित संस्थान मदद कर सकती हैं –

१. धार्मिक संस्थाएं (Religious Institutione)
२. समाज (Society)
३. परिवार (Family)
४. युवा वर्ग (Youth)

**१.धार्मिक संस्थाएं (Religious Institutions)**

- **धार्मिक संस्थाएं** पाठशाला के लिए अलग से फण्ड बनाये जिससे पाठशाला की किताबें, कॉपी,बैग,गिफ्ट,प्रोजेक्टर आदि की व्यवस्था करें।
- **धार्मिक संस्थाओं** का यह भी कर्तव्य बनता है कि पाठशाला के अध्यापकों की आर्थिक रूप से यथायोग्य सहायता करे जिससे शिक्षक खुले विचारों से पढ़ा सके।
- धार्मिक संस्थानों को नियमित रूप से अपनी संस्थान में अच्छे स्तर पर पाठशालाएं संचालन कराना चाहिए एवम् बच्चो के घर से पाठशाला एवं पाठशाला से घर तक आने जाने की व्यवस्था, और उपयुक्त ट्रांसपोर्ट का प्रबंधन करना चाहिए।
- धार्मिक संस्थानों को शिविर आदि केवल बड़े उम्र के लोगो के लिए ही नहीं, बल्कि साल में १-२ शिविर छोटे - छोटे बच्चो को मुख्य रख कर रखना चाहिए, जिससे ज्यादा से ज्यादा बच्चे मंदिर, पाठशाला आदि से जुड़ सके। यह बहुत महत्वपूर्ण और विचारणीय बिंदु है कि आज संस्थाएं अपना पूरे बजट का कितना खर्चा छोटे बच्चो या उनकी पाठशालाएं संचालन में लगाती हैं, बच्चे की नीव उनका बचपन हैं, बड़े होकर उनका कैसा चरित्र रहेगा, यह उसने बचपने में क्या सीखा उस पर निर्भर रहता है।

२. **समाज** :

- समाज के लोग प्रयास करे कि मंदिरों में दान के साथ पाठशाला के लिए भी दान दे।
- समाज के लोग अपने बच्चो को तो नियमित भेजे ही पाठशाला में और इसके अलावा, अपने आस पास के बच्चो को भी प्रोत्साहित करे कि वो भी पाठशालाओं से जुड़े।

**३.परिवार (Family)**

- परिवार वाले अपने बच्चो को पाठशाला जाने में सहयोग करे,, उनकी व्यवस्थाएं करे – ट्रांसपोर्ट आदि की, लेने जाने और छोड़ने की, और अगर पाठशालाएं उनके निकट मंदिर में नहीं चल रही है, तो मंदिर के अध्यक्ष एवं वहां के संस्थापकों को के कर पाठशालाएं चालू कराए।
- परिवार वालो को अपने बच्चो को पाठशालाओं का जीवन शैली को उच्च करने में क्या योगदान हैं, इसका ज्ञान कराना चाहिए।

**४.युवा वर्ग (Youth)**

- युवा वर्ग जो नौकरी या पढ़ाई कर रहे, वो अपने खाली समय में एक निश्चित समय निकालकर, बच्चो की पाठशालाएं लेकर, अध्यापकों की कमी पूरी कर सकते एवम् पठशालों को एक अच्छे स्तर पर पहुंचा सकते हैं।
- क्योंकि युवा वर्ग आज के समय से चित परिचित है, तो बच्चे उनसे ज्यादा जुड़ता हैं, इसीलिए यह भी महत्वपूर्ण है कि युवा वर्ग भी उनसे ज्यादा से ज्यादा जुड़े।

- युवा वर्ग जो नौकरी कर रहे हैं, वो अपनी सैलरी का कुछ हिस्सा पाठशालाओं में योगदान करे।
- आज के युवाओं को आधुनिक तकनीक का भी ज्यादा ज्ञान है तो वो इस तरह से पाठशालाओं में projector, कैमरा, माइक और नई टेक्नोलॉजी से और रुचिवंत बना सकते हैं।

**प्रश्न 3. आज के युग में पाठशाला चलाना कितना महत्वपूर्ण है, या क्या वास्तव में इन पाठशालाओं से बच्चो के जीवन पर कोई असर पड़ता हैं और क्या इन बच्चो का हमारी समाज और हमारे देश पर क्या असर पड़ता हैं ?**

उत्तर : इस एक प्रश्न में दो प्रश्न छुपे हैं, तो हम दोनों प्रश्नों को अलग अलग कर विचार करेंगे -

१.पहला प्रश्न - पाठशालाओं का बच्चे के जीवन पर असर, और

२.दूसरा प्रश्न - बच्चो का समाज पर असर

**१.पहला प्रश्न - पाठशालाओं का बच्चे के जीवन पर असर**

- पाठशालाओं से बच्चो की नींव मजबूत होती हैं, जो उनकी नैतिकता को विकसित एवम् आगे तक द्रद बनाते हैं, जिससे आगे के जीवन में भी वो कोई ग़लत मार्ग पर ना चले जाए।
- **पाठशाला से बच्चो में दृढ़ता विकसित होती है , उनको छोटे छोटे नियम आदि दिलवा कर और उन नियमों की महिमा एवं नियमों के तोड़ने का फल बताकर।**
- पाठशालाओं से बच्चो की क्रिएटिविटी, उनकी पब्लिक स्पीकिंग आदि पर भी उनको लाभ होता हैं।
- पाठशालाओं अगर मंदिरों में संचालन हो रही है तो वहां पर बच्चो को सत्संगती मिलती हैं, जिससे आगे के जीवन तक बच्चे के भटकने की आशंका कम रहती है।

**२.दूसरा प्रश्न - बच्चो का समाज पर असर**

- इसपर एक छोटी सी कहानी है कि "जब एक बार समाज में एक अपराधी को फांसी दी जा रही थी तो उससे पूछा गया कि आपकी अंतिम इच्छा क्या है, तो उसने जवाब दिया कि मेरे से पहले मेरी मां को फांसी दी जाए, क्योंकि जब में बचपन में पहली बार अपने स्कूल से एक पेंसिल चुरा कर लाया था, तब मेरी मां ने मेरे को कुछ नहीं कहा, और वो चोरी फिर दकेती और आज मर्डर में बदल गई"।
- आज समाज में लोग यह कहते हैं की आज भी भारत सोने की चिड़िया बनाई जा सकती हैं, यदि भारत में डॉक्टरों का व्यवसाय सुधार दिया जाए, वहां कोई दया-धर्म, नहीं है; वकील का व्यवसाय में सुधार हो जाए क्योंकि वहां अपने झूठ के कारण एक दोषी को निर्दोष साबित कर देते हैं ;एक चार्टर्ड अकाउंट (CA) के व्यवसाय में सुधार किया जाए क्योंकि वहां टैक्स की चोरी होती हैं; सरकारी विभाग की नौकरी का सुधार किया जाए क्योंकि वहा पर भ्रष्टाचार हैं; तो वहां पर यही कहना है कि कोई भी व्यवसाय खराब नहीं है, बस उन व्यवसायों को जो लोग कर रहे है, उनको उनके उनके चरित्र (Character) सुधारने की जरूरत में हैं, आज आपको एक दयालु डॉक्टर ;एक सच्चा वकील ;एक ईमानदार चार्टर्ड अकांटेंट्स और, एक भ्रष्टाचार मुक्त सरकारी नौकर , मिल जाएंगे लेकिन यह सब निर्भर करते है, व्यवसाई के चरित्र (Character) पर, ,वो चरित्र निर्भर करता है उसकी नैतिकता और सिद्धांतो पर और वो नैतिकता और सिध्दांत किसी के बड़ी उम्र में विकसित नहीं होते, वो बल्कि उनके बचपन और बालपने से ही विकसित होने लग जाते हैं, तो एक बच्चे की समाज में कितनी अहम भूमिका है हम इस बिंदु से इसको समझ सकते हैं।

- जैसे किसी भी पौधे और उस पौधे के फलो की गुणवत्ता, उसके बोए हुए बीज पर निर्भर करती है, उसी तरह एक बच्चे के आगे का जीवन इस पर निर्भर करता है कि उसने अपने जीवन के शुरूआती वर्षों में क्या नैतिकता सीखी बच्चे की सफलता या असफलता का आधार, बच्चे की शिक्षा या उसकी कमाई से नहीं मापी जा सकती, बल्कि जीवन की नैतिकता से बच्चे की सफलता या असफलता का सही आकलन लगाया जा सकता है।

**अंत में, मैं अपने निबंध के माध्यम से यही कहना चाहूंगा कि इस प्रश्न-उत्तर के रूप में लिखे हुए निबंध में आप उत्तरों पर ज्यादा ध्यान ना देकर, उनके प्रश्नों को ज्यादा सोचे।**

*(इस essay में अगर कहीं भी मेरी हिंदी भाषा लिखने में भूल हुई तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूं, मैंने अपनी तरफ से पूरी सावधानी बरतने की कोशिश की हैं)*

मंगालर्थी अभिषेक जैन
( 5th Batch)